

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ इकहत्तर

भू-राजनीतिक शतरंज: वेटिकन, साम्यवाद, और विश्व पर वर्चस्व की खोज

Jeff Pippenger

2024-04-01

यह पुस्तक *The Keys of This Blood: The Struggle for World Dominion Between Pope John Paul II, Mikhail Gorbachev, and the Capitalist West*, मलाकी मार्टिन द्वारा लिखी गई थी, और यह पहली बार 1990 में प्रकाशित हुई थी। मार्टिन 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्विक राजनीति और कूटनीति में एक रूपांतरणकारी व्यक्तित्व के रूप में पोप जॉन पॉल II की भूमिका का परीक्षण करते हैं। वे पूर्वी यूरोप में साम्यवाद के पतन में पोप की भूमिका पर चर्चा करते हैं। यह पुस्तक उन गतिशीलताओं पर एक कैथोलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिनके परिणामस्वरूप 1989 में, अर्थात् अंत के समय, दानियेल 11 के चालीसवें पद की पूर्ति हुई।

मार्टिन मिखाइल गोर्बाचेव के नेतृत्व में सोवियत संघ की आंतरिक गतिशीलता का विश्लेषण करते हैं, विशेष रूप से गोर्बाचेव की "glasnost" (खुलापन) और "perestroika" (पुनर्गठन) नीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए। वह सोवियत संघ के सामने मौजूद चुनौतियों और साम्यवादी व्यवस्था में सुधार के लिए गोर्बाचेव के प्रयासों पर चर्चा करते हैं। वह सोवियत संघ (दक्षिण का राजा - ड्रैगन), कैथोलिक चर्च (उत्तर का राजा - पशु), और जिसे वह पूंजीवादी पश्चिम कहते हैं (उत्तर के राजा की प्रॉक्सी सेना - झूठा नबी) के बीच भू-राजनीतिक तनाव और शक्ति संघर्षों का अन्वेषण करते हैं। वह शीत युद्ध काल के वैचारिक संघर्ष, जासूसी और गुप्त अभियानों पर चर्चा करते हैं और विश्व के भविष्य को आकार देने के लिए विभिन्न पक्षों के प्रयासों की पड़ताल करते हैं।

मार्टिन वैश्विक राजनीति और कूटनीति में एक शक्ति के रूप में कैथोलिक धर्म के महत्व पर जोर देता है। वह तर्क देता है कि पोप जॉन पॉल द्वितीय के नेतृत्व में कैथोलिक चर्च ने इस अवधि में इतिहास की दिशा को आकार देने और शीत युद्ध के परिणाम को प्रभावित करने में निर्णायक भूमिका निभाई। वह जॉन पॉल के प्रभाव को पुर्तगाल के फातिमा में मरियम के प्रकट होने की घटनाओं के संदर्भ में रखता है, और वैश्विक घटनाओं पर फातिमा के प्रभाव तथा इतिहास की दिशा को आकार देने में कैथोलिक चर्च की भूमिका की पहचान करता है। मार्टिन सुझाव देता है कि फातिमा की घटनाओं के महत्वपूर्ण भविष्यसूचक और भू-राजनीतिक निहितार्थ हैं, विशेषकर शीत युद्ध के दौर के संदर्भ में।

मार्टिन फातिमा के तीन रहस्यों की पड़ताल करते हैं, जिन्हें कथित तौर पर 1917 में फातिमा में तीन युवा चरवाहे बच्चों को कुंवारी मरियम ने प्रकट किया था। वे सुझाव देते हैं कि तीसरा रहस्य, जिसे प्रारंभ में वेटिकन ने गोपनीय रखा और 2000 में ही उजागर किया, कैथोलिक चर्च और विश्व के भविष्य के बारे में प्रलयकारी चेतावनियाँ समेटे हुए था। मार्टिन तर्क देते हैं कि फातिमा की घटनाओं, जिनमें दर्शन और कुंवारी मरियम द्वारा दिए गए संदेश शामिल थे, का वैश्विक राजनीति और शीत युद्ध काल के दौरान साम्यवाद और पूंजीवाद के बीच संघर्ष पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

मार्टिन फातिमा की भविष्यवाणियों की पूर्ति में पोप जॉन पॉल द्वितीय की भूमिका को एक प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में रेखांकित करते हैं। वे सुझाव देते हैं कि जॉन पॉल द्वितीय ने स्वयं को फातिमा के तीसरे रहस्य में उल्लिखित "सफेद वस्त्रधारी बिशप" के रूप में देखा, और यह कि उन्होंने अपने पोपाई कार्यकाल को बुराई की शक्तियों का सामना करने तथा कैथोलिक चर्च और व्यापक समाज में आध्यात्मिक नवीनीकरण को बढ़ावा देने के एक मिशन के रूप में माना।

मार्टिन का कहना है कि फ़ातिमा के संदेशों ने आध्यात्मिक युद्ध के महत्व और कैथोलिक चर्च के भीतर तथा बाहर, दोनों जगह मौजूद बुराई की शक्तियों का सामना करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वह तर्क देते हैं कि फ़ातिमा की घटनाओं ने आधुनिक दुनिया में मानवता के सामने खड़ी चुनौतियों को समझने और उनका सामना करने के लिए एक आध्यात्मिक और नैतिक ढांचा प्रदान किया। फ़ातिमा के संदेश शैतानी संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो

कैथोलिक धर्म को इस बात के लिए तैयार करते हैं कि वह शैतान को मसीह के रूप में स्वीकार करे, जब वह शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय "मसीह का रूप धरता है"।

शैतान पृथ्वी पर रहने वालों को धोखा देने के लिए चमत्कार करेगा। आत्मवाद मृतकों का रूप धराकर अपना कार्य करेगा। जो धार्मिक संस्थाएँ परमेश्वर की चेतावनी के संदेशों को सुनने से इनकार करेंगी, वे गहरे धोखे में पड़ जाएँगी और संतों को सताने के लिए राजकीय सत्ता के साथ मिल जाएँगी। प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाले लोगों को सताने में पापाई सत्ता के साथ एक हो जाएँगी। यही वह शक्ति है जो उत्पीड़न के महान तंत्र का गठन करती है, जो मनुष्यों के विवेक पर आध्यात्मिक तानाशाही थोपेगी।

'उसके दो सींग मेम्ने के समान थे, और वह अजगर के समान बोलता था।' यद्यपि वे परमेश्वर के मेम्ने के अनुयायी होने का अंगीकार करते हैं, फिर भी लोग अजगर की आत्मा से भर जाते हैं। वे अपने को दीन और नम्र बताते हैं, पर वे शैतान की आत्मा से बोलते और विधान करते हैं, और अपने आचरण से प्रकट करते हैं कि वे जो होने का दावा करते हैं, उसके ठीक विपरीत हैं। यह मेम्ने-सदृश शक्ति उन लोगों पर युद्ध करने में अजगर के साथ मिल जाती है जो परमेश्वर की आज्ञाएँ मानते हैं और यीशु मसीह की गवाही रखते हैं। और शैतान इस संसार के देवता के रूप में प्रोटेस्टेंटों और पोपवादियों के साथ मिलकर, उनके साथ एकतान होकर कार्य करता है, मनुष्यों पर ऐसे हुक्म चलाता है मानो वे उसके राज्य की प्रजा हों, जिन्हें वह अपनी इच्छा के अनुसार बरत सके, शासित कर सके और नियंत्रित कर सके।

"यदि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं को पैरों तले रौंदने पर सहमत नहीं होंगे, तो अजगर की आत्मा प्रकट हो जाती है। उन्हें कैद किया जाता है, परिषदों के सामने प्रस्तुत किया जाता है, और उन पर जुर्माना लगाया जाता है। 'वह छोटे और बड़े, धनी और निर्धन, स्वतंत्र और दास, सबके दाहिने हाथ पर या उनके माथे पर एक चिन्ह लगवा देता है' [प्रकाशितवाक्य 13:16]। 'उसके पास पशु की मूर्ति में प्राण फूंकने की शक्ति थी, ताकि पशु की मूर्ति बोले भी, और जितने लोग पशु की मूर्ति की उपासना न करें, उन्हें मरवा दे' [पद 15]। इस प्रकार शैतान यहोवा के विशेषाधिकारों को हड़प लेता है। पाप का मनुष्य परमेश्वर के आसन पर बैठता है, अपने आप को परमेश्वर घोषित करता है, और परमेश्वर से ऊपर होकर आचरण करता है।" मैनुस्क्रिप्ट रिलीज़ेस, खंड 14, 162.

मसीह-विरोधी रोम के पोप और शैतान—दोनों का प्रतीक है, क्योंकि रोम का पोप शैतान का पृथ्वी पर प्रतिनिधि है। "इस प्रकार शैतान यहोवा के विशेषाधिकारों पर कब्ज़ा कर लेता है। अधर्म का मनुष्य परमेश्वर के सिंहासन पर बैठता है, अपने आप को परमेश्वर घोषित करता है, और परमेश्वर से ऊपर होकर आचरण करता है।" शैतान का इरादा है कि जब वह नियंत्रण कर लेगा तो वह संसार को इस प्रकार वश में करेगा कि वह मनुष्यों पर यूँ हुक्म चलाएगा, "मानो वे उसके राज्य के प्रजाजन हों, जिन्हें वह जैसे चाहे वैसे बरते, शासित करे और नियंत्रित करे।" धार्मिक सिंहासन से शासन करने के लिए उसने कैथोलिक कलीसिया की स्थापना की, और राजनीतिक सिंहासन से शासन करने के लिए उसने संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की।

"मूर्तिपूजा और ईसाई धर्म के बीच इस समझौते का परिणाम, पहले से बताई गई भविष्यवाणी के अनुसार, 'पाप का मनुष्य' का विकास था, जो परमेश्वर का विरोध करता है और अपने आप को परमेश्वर से ऊपर उठाता है। झूठे धर्म की वह विशाल व्यवस्था शैतान की शक्ति की एक उत्कृष्ट कृति है - उसके प्रयासों का स्मारक कि वह अपनी इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने के लिए स्वयं को सिंहासन पर बैठाए।" The Great Controversy, 50.

फातिमा का चमत्कार और उसकी शैतानी भविष्यवाणी वही साधन हैं जिनका उपयोग शैतान ने एक ऐसा भविष्यसूचक परिदृश्य तैयार करने के लिए किया है, जो उसके प्रकट होने और मसीह का रूप धारण करने पर कैथोलिक धर्म को अपनी कलीसिया को शीघ्र ही उसके नियंत्रण में सौंप देने की अनुमति देता है। मसीह का उसका रूप धारण करना निकट आने वाले रविवार के कानून से आरंभ होता है, जो दानियेल अध्याय ग्यारह के पद 16, 22, 31 और 41 में दर्शाया गया है।

“परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए पोपतंत्र की संस्था को प्रवर्तित करने वाली आज्ञापति के द्वारा, हमारा राष्ट्र स्वयं को धर्म से पूर्णतः विच्छिन्न कर लेगा। जब प्रोटेस्टेंटवाद उस खाई के पार अपना हाथ बढ़ाकर रोमी सत्ता का हाथ थामेगा, जब वह उस अथाह गर्त के ऊपर से पहुँचकर आत्मवाद के साथ हाथ मिलाएगा, जब इस त्रिविध संघ के प्रभाव के अधीन हमारा देश एक प्रोटेस्टेंट और गणतांत्रिक शासन के रूप में अपने संविधान के प्रत्येक सिद्धांत का परित्याग कर देगा, और पोपीय मिथ्याओं तथा भ्रमों के प्रसार के लिए प्रावधान करेगा, तब हम जान सकेंगे कि शैतान के अद्भुत कार्य करने का समय आ पहुँचा है और अंत निकट है।” Testimonies, volume 5, 451.

संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय, "शैतान के अद्भुत कार्य करने का समय आ गया है।" प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह, पद ग्यारह में, संयुक्त राज्य अमेरिका "अजगर की तरह" "बोलता" है; और फिर पद तेरह में—जो बस यह दर्शाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका "बोलता" है, यानी रविवार का कानून पारित करके, तो क्या होता है—शैतान स्वर्ग से आग नीचे बुलाता हुआ प्रतीत होता है।

परमेश्वर के सेवक, जिनके मुख पवित्र समर्पण से आलोकित और दीप्त होंगे, स्वर्ग का संदेश प्रचार करने के लिए स्थान-स्थान पर शीघ्रता से जाएँगे। समस्त पृथ्वी पर हज़ारों कंटों से यह चेतावनी दी जाएगी। चमत्कार किए जाएँगे, रोगी चंगे किए जाएँगे, और चिन्ह व आश्चर्यकर्म विश्वासियों का साथ देंगे। शैतान भी कार्य करेगा, झूठे आश्चर्यकर्मों के साथ, यहाँ तक कि मनुष्यों के देखते-देखते आकाश से आग उतार देगा। प्रकाशितवाक्य 13:13। इस प्रकार पृथ्वी के निवासियों को अपना पक्ष लेने के लिए लाया जाएगा। महान विवाद, 611, 612।

फातिमा के संदेशों की पुष्टि एक ऐसे चमत्कार द्वारा हुई, जिसकी साक्षी उस नास्तिक सरकारी समाचार-पत्रों ने दी जो इस उद्देश्य से उस घटना में उपस्थित हुए थे कि तथाकथित कुँवारी मरियम के मई से लेकर 13 अक्टूबर, 1917 के चमत्कार तक प्रत्येक महीने की तेरहवीं तिथि को उन तीन बच्चों के पास आने के विषय में किए गए दावों का खंडन कर सकें। चमत्कार के समय फातिमा में उपस्थित प्रत्येक नास्तिक समाचार-संगठन ने उस घटना की पुष्टि की। वह एक वास्तविक चमत्कार था (शैतान का)।

जैसा कि मलाची मार्टिन ने अपनी पुस्तक में बताया है, पोप जॉन पॉल फ़ातिमा की माता मरियम के प्रति अपनी भक्ति से मार्गदर्शित थे। फ़ातिमा की गुप्त भविष्यवाणी, जो वर्ष 2000 तक प्रकट नहीं की गई थी, निस्संदेह एक शैतानी भविष्यवाणी थी, लेकिन अंत समय में यीशु प्रारंभिक दिनों की पुनरावृत्ति करते हैं। बाइबल की सबसे प्राचीन पुस्तक, जो मूसा ने सबसे पहले लिखी, अय्यूब की पुस्तक है, और यह बताती है कि अय्यूब, जो एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि सारी भविष्यवाणियाँ अंत समय में सबसे परिपूर्ण रूप से पूरी होती हैं। अय्यूब की कहानी में, अय्यूब की परीक्षा लेने के उद्देश्य से शैतान को उस पर मृत्यु और विनाश लाने की अनुमति दी जाती है। अंत समय में शैतान को जो चमत्कार करने की अनुमति है, वे वास्तविक चमत्कार हैं। वे शैतानी चमत्कार हैं, परन्तु परमेश्वर ने शैतान को उसका सर्वोच्च कृत्य पूरा करने की अनुमति दी है, उसी उद्देश्य से जिस उद्देश्य से उसने शैतान को अय्यूब की परीक्षा लेने की अनुमति दी थी।

बहुत से लोग आध्यात्मिक प्रगटीकरणों का स्पष्टीकरण देने के लिए उन्हें पूरी तरह मीडियम की धोखाधड़ी और हाथ की सफ़ाई का फल ठहराते हैं। परंतु, यद्यपि यह सत्य है कि चालबाज़ी के परिणामों को अक्सर असली प्रगटीकरण बताकर पेश किया गया है, फिर भी अलौकिक शक्ति के उल्लेखनीय प्रदर्शन भी हुए हैं। जिस रहस्यमय खटखटाहट से आधुनिक स्पिरिचुअलिज़्म का प्रारंभ हुआ, वह मानवी चालबाज़ी या धूर्तता का परिणाम नहीं थी, बल्कि दुष्ट स्वर्गदूतों का सीधा कार्य था, जिन्होंने इस प्रकार आत्माओं का नाश करने वाले भ्रमों में से एक अत्यंत सफल भ्रम को प्रवर्तित किया। बहुत से लोग इस विश्वास के कारण फँस जाएंगे कि स्पिरिचुअलिज़्म मात्र मानवीय छल-कपट है; जब वे ऐसे प्रगटीकरणों से आमने-सामने होंगे जिन्हें वे अलौकिक समझे बिना नहीं रह सकते, तब वे धोखा खाएँगे और उन्हें परमेश्वर की महान शक्ति मानकर स्वीकार कर लेंगे।

ये लोग शास्त्रों की उस गवाही को नज़रअंदाज़ कर देते हैं जो शैतान और उसके प्रतिनिधियों द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में है। फिरौन के जादूगर परमेश्वर के कार्य की नकल शैतानी सहायता से ही कर पाए थे। पौलुस

गवाही देता है कि मसीह के दूसरे आगमन से पहले शैतानी शक्ति के इसी प्रकार के प्रदर्शन होंगे। प्रभु के आने से पहले 'सारी शक्ति और चिन्हों और झूठे अद्भुत कामों सहित शैतान का काम करना, और समस्त अधर्म की छलना के साथ' होगा। 2 थिस्सलुनीकियों 2:9,10। और प्रेरित यूहन्ना, अंतिम दिनों में प्रकट होने वाली चमत्कार करने की शक्ति का वर्णन करते हुए, कहता है: 'वह बड़े-बड़े चमत्कार करता है, यहाँ तक कि मनुष्यों के देखते-देखते आकाश से पृथ्वी पर आग तक उतार देता है; और उन चमत्कारों के कारण, जिन्हें करने की उसे शक्ति थी, वह पृथ्वी पर रहने वालों को भरमाता है।' प्रकाशितवाक्य 13:13,14। यहाँ केवल बनावटी धोखे की बात नहीं की गई है। लोग उन चमत्कारों से धोखा खाते हैं जिन्हें करने की शक्ति शैतान के प्रतिनिधियों के पास है, न कि उनसे जिन्हें करने का वे केवल ढोंग करते हैं। The Great Controversy, 553.

मलाची मार्टिन की पुस्तक में फातिमा के संदेशों को कलीसिया के भीतर चल रहे एक आंतरिक संघर्ष के संदर्भ में, अंतिम दिनों में कैथोलिकवाद की भविष्योक्तिपूर्ण संरचना के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे या तो अच्छे पोप बनाम बुरे पोप, या परंपरावादी पोप बनाम उदारवादी पोप के रूप में निरूपित किया जा सकता है। परंपरावादी—और मार्टिन की चमत्कार-संबंधी व्याख्या के अनुसार 'अच्छे' पोप—अपनी समझ को प्रथम वैटिकन परिषद (जिसे वैटिकन I भी कहा जाता है) पर आधारित करते हैं, जो 8 दिसंबर 1869 से 20 जुलाई 1870 तक आयोजित हुई; इसे पोप पायस IX ने बुलाया था और इसका मुख्य ध्यान पोपीय अचूकता के सिद्धांत को परिभाषित करने तथा उस समय कैथोलिक कलीसिया के सामने उपस्थित विभिन्न धर्मशास्त्रीय और सिद्धान्तगत मुद्दों का समाधान करने पर केंद्रित था। द्वितीय वैटिकन परिषद, जिसे सामान्यतः वैटिकन II कहा जाता है, बहुत बाद में 11 अक्टूबर 1962 से 8 दिसंबर 1965 तक आयोजित हुई। इसे पोप जॉन XXIII ने बुलाया था और जॉन XXIII की मृत्यु के बाद पोप पॉल VI ने इसे जारी रखा।

मार्टिन के शब्दों में, कैथोलिक धर्म के अंतिम दिन रोम की कलीसिया की अभांतता और प्रधानता—जैसा कि वैटिकन प्रथम परिषद में प्रतिपादित किया गया था—और उस उदारवाद के बीच संघर्ष की ओर संकेत करते हैं, जिसे इस समय वोक पोप फ्रांसिस प्रदर्शित कर रहे हैं और जो वैटिकन द्वितीय परिषद के दस्तावेजों में परिलक्षित है। मार्टिन का सुझाव है कि कलीसिया पर नियंत्रण के इन दो दृष्टिकोणों के बीच के संघर्ष के दौरान तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ जाता है, और यीशु लौटकर पृथ्वी पर आते हैं, अच्छे पोप को अपना आशीर्वाद देते हैं और कैथोलिक कलीसिया का सिंहासन ग्रहण करते हैं।

दानियेल ग्यारह के तेरह से पंद्रहवें पदों में, सोलहवें पद के रविवार व्यवस्था से ठीक पहले का इतिहास प्रतिनिधि युद्धों की तीसरी और अंतिम लड़ाई का वर्णन करता है। यह वह लड़ाई है जो ग्यारहवें और बारहवें पदों में पुतिन की विजय के पश्चात् आती है, परन्तु उन तीन पदों के मध्य में, चौदहवाँ पद यह पहचान कराता है कि अंतिम दिनों के इतिहास में कैथोलिकता कब प्रवेश करती है।

यशायाह के अनुसार, बाइबल की भविष्यवाणी के छोटे राज्य के प्रतीकात्मक सत्तर-वर्षीय शासनकाल के दौरान रोम की वेश्या भुला दी जाती है। पहली बार पृथ्वी पर पोपतंत्र 538 में सिंहासनारूढ़ हुआ; उसके सिंहासनारोहण से पहले का मील का पत्थर 533 में जस्टिनियन का फ़रमान था।

जस्टिनियन के फरमान से संबंधित इतिहास यह दर्शाता है कि जस्टिनियन ने अपने राज्य में अशांति पैदा कर रहे धार्मिक विवाद को समाप्त करके अपने राज्य पर नियंत्रण समेकित करने का प्रयास किया। यह विवाद इस बात पर था कि पूर्व में कॉन्स्टैन्टिनोपल का चर्च या पश्चिम में रोम का चर्च—इनमें से कौन कथित ईसाई चर्च का प्रमुख है। तेरहवें पद में, संयुक्त राज्य अमेरिका का अंतिम राष्ट्रपति एक ऐसे विवाद का सामना करेगा जो उसे जस्टिनियन के इतिहास की पुनरावृत्ति करने और यह घोषित करने के लिए बाध्य करेगा कि कैथोलिक चर्च चर्चों का प्रमुख तथा विधर्मियों का सुधारक है, ताकि अपनी शक्ति को समेकित करने के लिए आवश्यक राजनीतिक समर्थन स्थापित किया जा सके।

हमें फ्रातिमा की शैतानी भविष्यवाणियों पर कोई भरोसा नहीं रखना चाहिए, परन्तु हमें यह देखना आवश्यक है कि परमेश्वर के वचन में क्या प्रकट किया गया है। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में पृथ्वी के पशु के दोनों सींग अपनी तीसरी पीढ़ी में प्रवेश कर गए, जो समझौते की पीढ़ी है। रिपब्लिकन सींग ने अपनी वित्तीय प्रणाली विश्व बैंकों को सौंप दी, जिनकी जड़ें रेड शील्ड के घराने, अर्थात् रोथ्सचाइल्ड्स, तक जाती हैं, और जिनके इल्यूमिनाती, फ्रीमेसनरी, गुप्त समाजों और जेसुइट आदेश के साथ रहस्यमय संबंध हैं। सिस्टर व्हाइट इन संस्थाओं के बारे में सीधे चेतावनी देती हैं। उसी समयावधि में प्रोटेस्टेंट सींग के रूप में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म ने अपनी शैक्षिक और धार्मिक संस्थाओं को संसार के शासन के अधीन कर दिया।

उसी कालखंड में, आधुनिक दक्षिण का राजा अपना इतिहास रूसी क्रांति से शुरू करता है, और आधुनिक उत्तर का राजा अपना इतिहास फ्रातिमा के चमत्कार से शुरू करता है। जैसा कि मलाकी मार्टिन अपनी पुस्तक में ज़ोर देकर कहते हैं, अच्छे और बुरे पोप के बीच के आंतरिक संघर्ष से इतर, फ्रातिमा के संदेशों ने यह पहचाना कि कैथोलिक धर्म का संघर्ष सामान्यतः नास्तिकता के विरुद्ध है, पर विशेष रूप से रूस की नास्तिकता के विरुद्ध। वह रहस्य, जिस पर 1917 में पोप को कार्य करना था, में यह (शैतानी) वादा निहित था कि यदि पोप एक कॉन्क्लेव बुलाकर रूस को कुँवारी मरियम को समर्पित कर दें, तो दूसरा विश्वयुद्ध नहीं होगा। इसमें यह भी बताया गया था कि अगर पोप इंकार करते, तो रूस अपनी विचारधारा दूर-दूर तक फैला देता और तब एक और विश्वयुद्ध होता।

द्वितीय विश्वयुद्ध में रूस के साम्यवाद के विरुद्ध कैथोलिकवाद का युद्ध भी सम्मिलित था। उस युद्ध में कैथोलिकवाद की प्रतिनिधि सेना नाज़ी जर्मनी थी। पोपशाही सदा ही प्रतिनिधि सेनाओं का उपयोग करती है। 1933 में कैथोलिक चर्च ने, कार्डिनल पाचेल्ली के कार्य के माध्यम से, आदोल्फ हिटलर के साथ एक कॉन्कॉर्डेट पर हस्ताक्षर किए, जिसने हिटलर को जर्मनी पर नियंत्रण प्राप्त करने की अनुमति दी; और स्वयं हिटलर की गवाही के अनुसार, वही अनुबंध (कॉन्कॉर्डेट) था जिसने हिटलर को यहूदी प्रश्न का समाधान करने की अनुमति दी। द्वितीय विश्वयुद्ध में नाज़ी, नास्तिक रूस के विरुद्ध पोपशाही की प्रतिनिधि शक्ति थे, और प्रतिनिधि युद्धों की दूसरी लड़ाई में, जो अब यूक्रेन में सम्पन्न की जा रही है, यह कार्यान्वयन एक और नाज़ी प्रतिनिधि सेना के द्वारा किया जा रहा है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

आत्मा की अमरता और रविवार की पवित्रता—इन दो बड़े भ्रमों के माध्यम से, शैतान लोगों को अपने धोखे के अधीन कर लेगा। पहला जहाँ आत्मवाद की नींव रखता है, वहीं दूसरा रोम के साथ सहानुभूति का बंधन बनाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रोटेस्टेंट सबसे आगे होंगे, जो इस खाई के पार अपने हाथ बढ़ाकर आत्मवाद का हाथ थामेंगे; वे इस गर्त के ऊपर से हाथ बढ़ाकर रोमन सत्ता से हाथ मिलाएँगे; और इस त्रिविध संघ के प्रभाव में, यह देश अंतःकरण के अधिकारों को रौंदने में रोम के पदचिह्नों का अनुसरण करेगा।

जैसे-जैसे आत्मवाद आज के नाममात्र के मसीही धर्म की अधिक निकट नकल करता है, वैसे-वैसे उसमें धोखा देने और फँसाने की शक्ति बढ़ती जाती है। स्वयं शैतान भी आधुनिक व्यवस्था के अनुरूप अपने को बदल लेता है। वह प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होगा। आत्मवाद के माध्यम से चमत्कार किए जाएंगे, बीमार चंगे होंगे, और अनेक अविवादीय आश्चर्यकर्म किए जाएंगे। और क्योंकि आत्माएँ बाइबल में विश्वास का दावा करेंगी और कलीसिया की व्यवस्थाओं के प्रति सम्मान प्रकट करेंगी, इसलिए उनके कार्य को दिव्य शक्ति के प्रकटीकरण के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

कथित ईसाइयों और अधर्मियों के बीच का भेद अब मुश्किल से ही पहचाना जाता है। कलीसिया के सदस्य संसार जो प्रेम करता है वही प्रेम करते हैं और उनके साथ मिल जाने को तत्पर हैं, और शैतान ने ठान रखा है कि उन्हें एक ही समूह में मिला दे और इस प्रकार सबको आत्मवाद के दल में खींचकर अपने उद्देश्य को सुदृढ़ करे। पोपवादी, जो चमत्कारों को सच्ची कलीसिया का सुनिश्चित चिन्ह बताकर घमंड करते हैं, इस चमत्कार करने वाली शक्ति से आसानी से धोखा खा जाएंगे; और प्रोटेस्टेंट भी, सत्य की ढाल को फेंक देने के कारण, भ्रमित हो जाएंगे। पोपवादी, प्रोटेस्टेंट और सांसारिक लोग समान रूप से भक्ति का केवल रूप स्वीकार करेंगे, उसकी

सामर्थ्य नहीं, और वे इस एकता में संसार के परिवर्तन तथा लंबे समय से प्रतीक्षित सहस्राब्दी के आगमन का एक भव्य आंदोलन देखेंगे।

आध्यात्मवाद के माध्यम से शैतान मानव जाति का हितैषी प्रतीत होता है, लोगों की बीमारियाँ चंगा करता हुआ और यह दावा करता हुआ कि वह धार्मिक आस्था की एक नई और अधिक उच्च प्रणाली प्रस्तुत करता है; परन्तु साथ ही वह विनाशकर्ता के रूप में कार्य करता है। उसके प्रलोभन असंख्य लोगों को नाश की ओर ले जा रहे हैं। असंयम बुद्धि को पदच्युत कर देता है; इंद्रिय-भोग, कलह और रक्तपात उसके बाद आते हैं। शैतान को युद्ध प्रिय है, क्योंकि वह आत्मा की सबसे निकृष्ट वासनाओं को भड़काता है और फिर अपने शिकारों—जो अवगुण और रक्त में डूबे होते हैं—को अनंतकाल में बहा ले जाता है। उसका उद्देश्य राष्ट्रों को एक-दूसरे के विरुद्ध युद्ध के लिए उकसाना है, क्योंकि इस प्रकार वह लोगों का मन परमेश्वर के दिन में खड़े रहने की तैयारी के कार्य से भटका सकता है।

"शैतान अप्रस्तुत आत्माओं की अपनी फसल काटने के लिए तत्वों के माध्यम से भी कार्य करता है। उसने प्रकृति की प्रयोगशालाओं के रहस्यों का अध्ययन किया है, और परमेश्वर जितनी अनुमति देता है उतनी सीमा तक वह तत्वों पर नियंत्रण करने के लिए अपनी सारी शक्ति का उपयोग करता है। जब उसे अय्यूब को कष्ट देने की अनुमति दी गई, तो कितनी शीघ्र भेड़-6करियाँ और झुंड, सेवक, घर, बच्चे—सब कुछ बहा दिए गए; मानो क्षण भर में ही एक के बाद एक विपत्ति आ गई। विध्वंसक की शक्ति से अपनी सृष्टि की रक्षा करना और उनके चारों ओर सुरक्षा-बाड़ लगाना परमेश्वर ही करता है। परन्तु मसीही जगत ने यहोवा की व्यवस्था के प्रति तिरस्कार दिखाया है; और प्रभु वही करेगा जो उसने घोषित किया है—वह पृथ्वी से अपनी आशीर्षें हटा लेगा और जो उसके नियम के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं तथा दूसरों को भी वही करने की शिक्षा दे रहे और मजबूर कर रहे हैं, उनसे अपनी रक्षक देखभाल हटा लेगा। जिन्हें परमेश्वर विशेष रूप से संरक्षित नहीं करता, उन सब पर शैतान का नियंत्रण होता है। वह अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए कुछ को कृपा और समृद्धि देगा, और दूसरों पर विपत्तियाँ लाएगा तथा लोगों को यह विश्वास दिलाएगा कि उन्हें कष्ट परमेश्वर दे रहा है।" महान विवाद, 588, 589.